

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी

पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर

आई०टी०आई० रोड, करौंदी, वाराणसी २२१००५(उ०प्र०),भारत

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, वाराणसी क्षेत्र की स्थापना सन् १९८७ में कलातत्त्वकोश योजना के कार्य हेतु प्रारम्भ किया गया। सन् १९८८ में वाराणसी केन्द्र को कलाकोश विभाग के अंग के रूप में उच्चस्तरीय शोध एवं प्रकाशन सम्बन्धी कार्यक्रमों हेतु स्थापित किया गया। मुख्य उद्देश्य था, बहुस्तरीय एवं बहुआयामी भारतविद्या (Indology) विषयक भारतीय कलाओं के विशिष्ट शब्दों को लेकर कलातत्त्वकोश का पच्चीस भागों में प्रकाशन। इस कार्य के लिए भारतविद्या तथा कलातत्त्वकोश से सम्बन्धित आधारभूत २६१ शब्दों का चयन किया गया एवं प्रारम्भिक संकल्पना में इस ग्रन्थ के सन्दर्भ संकलन को वर्णानुक्रमिक न करके विषयानुसार शास्त्रक्रम की दृष्टि से निर्दिष्ट किया गया। आज तक कलातत्त्वकोश के सात भाग प्रकाशित हो चुके हैं। 'प्रतीक' पर आधारित अष्टम भाग प्रकाशनाधीन है।

कलातत्त्वकोश के साथ-साथ कलामूलशास्त्र ग्रन्थमाला के विभिन्न ग्रन्थों के सम्पादन तथा अनुवाद; संस्कृत, पालि एवं प्राकृत भाषा में लिखित विविध शास्त्रों से कलातत्त्वकोश के लिये आधारभूत सामग्री का संग्रह एवं अनुवाद के साथ उसकी प्रस्तुति तथा इसके साथ ही निर्दिष्ट समयान्तराल में विविध प्रदर्शनी, कार्यशाला तथा संगोष्ठियाँ आयोजित करना भी क्षेत्रीय केन्द्र की कार्यसूची में समायोजित है। गत तैंतीस वर्षों की यात्रा में क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी पाँच विद्वान् संचालक तथा निदेशकों के योगदान से समृद्ध तथा परिवर्धित हुआ, जिसका विवरण निम्नवत है :-

<u>नाम</u>	<u>कार्यकाल</u>	<u>मुख्ययोगदान</u>
१. डॉ० बेटिना बॉमर	१९८८-१९९५	कलातत्त्वकोश (प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय खण्ड)का सम्पादन एवं शिल्परत्नकोश का सम्पादन
२. प्रो० रमेशचन्द्र शर्मा	१९९५-२००३	कलातत्त्वकोश चतुर्थ एवं पञ्चम भागका सम्पादन
३. प्रो० विद्यानिवास मिश्र	२००३-२००५	कलातत्त्वकोश षष्ठ भाग के साथ आनन्द के. कुमारस्वामी की पुस्तक 'परसेप्शन ऑफ वेदास्' का सम्पादन
४. प्रो० कमलेशदत्त त्रिपाठी	२००७- २०१६	कलातत्त्वकोश सप्तम भाग एवं नाट्यशास्त्र (नेपाल वाचना) का आलोचनात्मक संस्करण के साथ प्रथम भाग प्रकाशित हुआ।
५. प्रो० विजयशंकर शुक्ल	दिसम्बर २०१६ से कार्यरत हैं	उपर्युक्त योजनाओं के कार्य के साथ-साथ कई नवीन योजनाओं का शुभारम्भ। जिसका विवरण निम्नलिखित क्रम में है -

१. कलातत्त्वकोश

इन्दिरा गान्धी राष्ट्रीय कला केन्द्र की प्रमुख गतिविधियों एवं प्रकाशन समूहों में सर्वप्रधान है कलातत्त्वकोश। वस्तुतः इस कोश का उद्देश्य है उच्चस्तरीय शोध तथा अध्ययन द्वारा भारतीय ज्ञान भण्डार के विविध स्रोतों से आधारभूत सामग्री का संकलन करके कलाविषयक एक बहुस्तरीय एवं बहुआयामी कोश की शृंखला का पूर्ण करना जिसकी संरचना में समग्र रूप से भारतीय कला के तत्त्वों का पूर्णता के साथ परिचय प्राप्त हो। इसके लिये संस्कृत, प्राकृत तथा पालि भाषा में लिखित ग्रन्थों से आधारभूत शब्दों की एक सूची तैयार की गयी है जिसके ऊपर समग्र देश के प्रख्यात चिन्तकों एवं शास्त्रविदों ने कलातत्त्वकोश की संरचना के विषय में अपने-अपने विचार व्यक्त किये। समग्र रूप से कलातत्त्वकोश की प्रबन्धमाला को वर्णानुक्रमिक न करके परिकल्पित विषयानुसार विभिन्न भागों में विभक्त किया गया। प्रत्येक भाग एक निर्दिष्ट विषय/तत्त्वभित्ति निश्चित कर उसी के साथ संगति एवं सातत्य रख कर परवर्ती भागों की निर्मिति हुई। अभी तक इसके सात भाग प्रकाशित हुए हैं जिसका विवरण निम्न प्रकार है :-

कलातत्त्वकोश (प्रथम) -	व्याप्ति (Pervasiveness)
कलातत्त्वकोश (द्वितीय) -	देश-काल (Time& Space)
कलातत्त्वकोश (तृतीय) -	महाभूत (Primal Elements)
कलातत्त्वकोश (चतुर्थ) -	सृष्टि-विस्तार (Manifestation of Nature)
कलातत्त्वकोश (पञ्चम) -	आकार-आकृति (Form/Shape)
कलातत्त्वकोश (षष्ठ) -	आभास (Appearance)
कलातत्त्वकोश (सप्तम) -	स्थान-आयतन (Substratum/Abode)

इस शृंखला का अष्टम भाग 'प्रतीक' (Symbol/Motif) पर आधारित है जो प्रकाशन के लिए तैयार है। इसके अन्तर्गत निम्नलिखित मानक शब्दों पर चिन्तन प्रस्तुत किया गया है-

१. प्रतीक
२. स्वस्तिक
३. नन्द्यावर्त
४. श्रीवत्स
५. शालभञ्जिका
६. मकर/मीन
७. ध्वज
८. व्याल/इहामृग
९. मिथुन
१०. कीर्तिमुख/ग्रास

२. नाट्यशास्त्र (नेवारी वाचना) का आलोचनात्मक संस्करण

भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र, स्वतन्त्र शास्त्र के रूप में एक प्रमुख पौरुषेय कृति है। यद्यपि इस ग्रन्थ का प्रकाशन पूर्व में हो चुका है लेकिन नेवारी लिपि में उपलब्ध पाण्डुलिपियों का प्रयोग सम्पादन के लिए अभी तक नहीं सम्मिलित हो सका था। वाराणसी केन्द्र ने नेपाल से प्राप्त पाण्डुलिपियों के आधार पर

नाट्यशास्त्र की नेपाल वाचना का तीन खण्डों में सम्पादन का कार्यक्रम प्रारम्भ किया। इसका प्रथम भाग (प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी के सम्पादकत्व एवं डॉ० नरेन्द्रदत्त तिवारी के सहसम्पादकत्व में) मार्च २०१६ में प्रकाशित हो चुका है। द्वितीय भाग भी संपादित होकर प्रकाशनार्थ तैयार है। तृतीय भाग के सम्पादन का कार्य चल रहा है। इसके प्रयोग पक्ष को ध्यान में रखते हुए संस्कृत नाटकों के प्रयोग पर भी क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी ने कार्यक्रम शुरू किया एवं इसके प्रथम चरण में एक तीस दिन (१५.१.१४-१६.२.१४) की कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला की समाप्ति पर प्रशिक्षित छात्रों ने वेणीसंहार नाटक का मञ्चन भी किया। क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी का इस योजना के माध्यम से राष्ट्र के प्रति एक विशिष्ट योगदान यह भी है कि - केन्द्र ने तीन विद्वानों को तैयार किया जो नेवारी लिपि को मातृभाषा की तरह पढ़ते हैं। ये विद्वान् हैं - डॉ० नरेन्द्रदत्त तिवारी, डॉ० रजनीकान्त त्रिपाठी एवं डॉ० त्रिलोचन प्रधान।

३. संगोष्ठियों से सम्बन्धित प्रकाशन

सौन्दर्यशास्त्र पर आधारित व्याख्यानों को लेकर तैयार की गयी पुस्तक “Meaning & Beauty: Shastric Foundation of Indian Aesthetics” (प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी तथा डॉ प्रणति घोषाल के सहसम्पादकत्व में) तथा व्याकरणदर्शन पर आधारित संगोष्ठी के व्याख्यान को लेकर तैयार की गयी पुस्तक “Indian and Western Philosophy of Language” (प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी एवं प्रोफेसर प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय के सम्पादकत्व तथा डॉ प्रणति घोषाल के सहसम्पादकत्व में) प्रकाशित हो गई हैं। संगीत शास्त्र एवं कश्मीर शैव दर्शन के क्षेत्र में ठाकुर जयदेव सिंह के योगदान को ध्यान में रखकर आयोजित की गई संगोष्ठी के शोधपत्रों को एकत्र कर शलाकापुरुष : ठाकुर जयदेव सिंह (प्रोफेसर विजय शंकर शुक्ल तथा डॉ रजनीकान्त त्रिपाठी के सम्पादकत्व में) प्रकाशन के लिये तैयार है।

४. वाक्यपदीय परियोजना के अन्तर्गत संगोष्ठियों में प्रस्तुत प्रपत्रों का संपादन एवं प्रकाशन

वाक्यपदीय परियोजना के अन्तर्गत काशी के प्रसिद्ध वैयाकरणों के मन्तव्यों को संगृहीत किया गया है जिनमें प्रमुख रूप से पण्डित रामप्रसाद त्रिपाठी, पण्डित परमहंस मिश्र, पण्डित विद्यानिवास मिश्र, पण्डित आद्याप्रसाद मिश्र, प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी आदि के वाक्यपदीय के दार्शनिक पक्ष पर विचार हैं। इस संकलन का प्रकाशन तीन खण्डों में किया जाना है जिसका प्रथम भाग ‘वाक्यपदीय-विमर्श’ प्रकाशन हेतु प्रकाशक को प्रेषित किया जा चुका है। इसके साथ ही वाक्यपदीय के जाति समुद्देश एवं द्रव्य समुद्देश सम्बन्धित खण्ड भी प्रकाशन हेतु प्रकाशक को प्रेषित किया जा चुका है। शेष खण्डों पर कार्य चल रहा है।

५. शास्त्रीय ग्रन्थों की हिन्दी अनुवाद परियोजना

भारतीय ज्ञान परम्परा के सम्वर्धन एवं प्रसार को दृष्टि में रखते हुए क्षेत्रीय केन्द्र वाराणसी ने महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थों को हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशित करने की योजना प्रारम्भ की है। निम्नलिखित ३७ ग्रन्थों पर कार्य प्रारम्भ किया जा चुका है। अगले पाँच वर्षों में अधिक से अधिक ग्रन्थों को प्रकाशित करने की योजना है। हिन्दी परियोजना के अन्तर्गत जिन ग्रन्थों पर कार्य करने का विचार हुआ है वे निम्नवत् हैं -

१. शृंगारप्रकाश
२. भावप्रकाशन

३. बृहदेशी
४. रागलक्षण
५. शिल्पप्रकाश
६. शिल्परत्नकोश
७. बौधायन श्रौतसूत्र
८. जैमिनीय ब्राह्मण
९. रागविबोध
१०. कलातत्त्वकोश के सभी भाग
११. दत्तिलम्
१२. श्रीहस्तमुक्तावली
१३. नतननिर्णय
१४. चतुदण्डीप्रकाशिका
१५. स्वयम्भुःसूत्रसंग्रह
१६. मात्रालक्षण
१७. पुष्पसूत्र
१८. ईश्वरसंहिता
१९. कम्यनिकेशन विद् गॉड
२०. अपराजितपृच्छा
२१. वास्तुमण्डन
२२. परसेप्सन् ऑफ द वेदास्
२३. विद्यापति पदावली
२४. कलाधार
२५. लाट्यायन श्रौतसूत्र
२६. कलिकापुराणे मूर्तिविनिर्देशः
२७. संगीतोपनिषद् सारोद्धार
२८. मयमतम्
२९. रिसाल-ए-रागदर्पण
३०. इलस्टेटेड डिक्शनरी आफ वैदिक् रिचुअल्स
३१. डान्स ऑफ शिवा
३२. ट्रान्सफारमेशन् ऑफ नेचर इन आर्ट

६. काशी व्याख्यानमाला एवं स्मारक व्याख्यान शृंखला

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी काशी व्याख्यानमाला एवं स्मृति व्याख्यान शृंखला के माध्यम से काशी की बौद्धिक परम्परा को जनमानस में सम्प्रेषित करने के लिए प्रयासरत है। एक ओर काशी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत काशी के विविध पक्षों पर व्याख्यान आयोजित किये जा रहे हैं तो दूसरी ओर स्मृति व्याख्यान

शृंखला के अन्तर्गत व्याख्यान हेतु भारतीय विद्या के शीर्षस्थ निम्नलिखित बारह विद्वानों का चयन किया गया है-

१.	पण्डित गापीनाथ कविराज	-	वेद विद्या, तन्त्र एवं आगमशास्त्र
२.	ठाकुर जयदेव सिंह	-	कश्मीर शैव दर्शन एवं संगीतशास्त्र
३.	प्रोफेसर क्षेत्रेश चन्द्र चट्टोपाध्याय	-	वेद, तुलनात्मक धर्म एवं दर्शन
४.	पण्डित सुधाकर द्विवेदी	-	भारतीय गणित एवं ज्योतिषशास्त्र
५.	पण्डित राजेश्वर शास्त्री द्राविड़	-	न्यायशास्त्र
६.	पण्डित ओंकारनाथ ठाकुर	-	शास्त्रीय संगीत
७.	श्री दलसुखभाई मालवणिया	-	जैन दर्शन एवं प्राकृत भाषा
८.	पण्डित रामेश्वर झा	-	कश्मीर शैव दर्शन एवं व्याकरण दर्शन
९.	महापण्डित राहुत सांकृत्यायन	-	बौद्ध दर्शन एवं ग्रन्थ संरक्षण
१०.	पण्डित रामावतार शर्मा	-	संस्कृत साहित्य एवं आधुनिक दर्शन
११.	प्रोफेसर वासुदेव शरण अग्रवाल	-	लोक एवं कलायें
१२.	पण्डित विद्यानिवास मिश्र	-	संस्कृत साहित्य, पौराणिक वाङ्मय, लोक एवं भारतीय परम्परायें

७. मार्गदेशी परियोजना

भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व, संस्कार गीतों के संरक्षण, सम्वर्धन हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा प्रारम्भ की गयी एक महत्त्वपूर्ण परियोजना है 'मार्गदेशी परियोजना'। संस्कार गीतों के विरासत को पुनर्जीवित करने के साथ-साथ नयी पीढ़ी के कलाकारों में इसको सम्प्रेषित करना इस परियोजना का लक्ष्य है। भोजपुरी, अवध, ब्रज, बुन्देलखण्ड, मिथिला एवं आंशिक बिहार तथा मध्य प्रदेश के साथ-साथ वस्तुतः सम्पूर्ण भारत में संस्कार गीतों की परम्परा व्याप्त है। प्रारम्भिक वर्षों में भोजपुरी एवं अवधी क्षेत्र में प्रचलित संस्कार गीतों का संकलन करने का महत्त्वपूर्ण प्रयास किया गया है। परिणाम स्वरूप भोजपुरी भाषा के संस्कार गीतों पर आधारित एक भाग शीघ्र ही प्रकाशित किया जायेगा। आगामी वर्षों में अवधो, ब्रज, बुन्देलखण्ड, मिथिला आदि क्षेत्रों के संस्कार गीतों के संकलन का लक्ष्य रखा गया है। केन्द्र के द्वारा संस्कारगीतों को पुरातन शैली में डक्युमेण्टेशन करने की योजना है। इस परियोजना को संगीत विद्या एवं लोक परम्पराओं के ज्ञाता डॉ० प्रेमनारायण सिंह जी गति प्रदान कर रहे हैं।

८. सन्दर्भ पत्रों का कम्प्यूटरीकरण

वाराणसी केन्द्र के माध्यम से कलातत्त्वकोश से सम्बन्धित २६१ सन्दर्भ शब्दों पर ७९२७८ सन्दर्भ पत्र तैयार किये गये हैं जिनमें लगभग ७०००० सन्दर्भ पत्रों का नई दिल्ली स्थित मुख्यालय के द्वारा आलोकचित्रीकृत (Digitized) करके IGNCA webpage में upload कर दिया गया है जिससे कि समग्र देश के शोधार्थी इसका लाभ उठा सकें। यहाँ पर २६१ शब्दों पर मूलभूत सामग्री अंगेजी अनुवाद के साथ उपलब्ध है। आगामी वर्षों में शेष कार्य भी पूर्ण किया जायेगा।

९. प्रादेशिक लोकगीत एवं नाट्यशैली का दस्तावेजीकरण

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी ने उत्तरप्रदेश के पूर्वोत्तरभाग, बिहार तथा छत्तीसगढ़ के लोकनाट्य एवं गीत शैली के दस्तावेजीकरण का एक नया प्रयास भी आरम्भ किया। इस शृंखला के अन्तर्गत क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी ने 'लोकाख्यान परियोजना' का शुभारम्भ किया जिसमें वाराणसी, दक्षिणाञ्चल एवं संलग्न प्रदेशों की 'बिरहा' गीतों का दस्तावेजीकरण किया गया। इसमें छत्तीसगढ़ की चनैनी भी सम्मिलित है। इस परियोजना के विस्तार के रूप में वाराणसी के लोकगीतों 'चैती', 'होरी', 'ठुमरी', एवं 'दादरा' का भी दस्तावेजीकरण हो चुका है। आज तक प्रादेशिक लोकगीत एवं नाट्यशैलियों के चार अनुष्ठान आयोजित हुए हैं :-

१. बिरहा - २००९
२. लोरिक चन्दा - २०११
३. पूर्वी उत्तरप्रदेश की लोक गाथाएँ - २०१२
४. उत्तरप्रदेश तथा मध्य भारत के लोकनृत्य एवं नाट्यशैली - २०१२

संगोष्ठी एवं कार्यशालाओं का आयोजन -

समय समय पर क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय संगोष्ठियों के आयोजन के साथ भारतीय कला एवं संस्कृति पर प्रदर्शनियाँ भी आयोजित की जा रही हैं। शास्त्रीय ग्रन्थों के सम्पादन एवं तत्सम्बन्धित प्राचीन लिपियों के पाठन हेतु क्षेत्रीय केन्द्र पाण्डुलिपि एवं लिपिविज्ञान के प्रशिक्षण हेतु प्रायः वर्ष में एक या दो कार्यशालायें भी आयोजित कर रहा है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम -

भारतीय संगीत के प्रायोगिक पक्ष को ध्यान में रख कर केन्द्र ध्रुपद महोत्सव के आयोजन के साथ-साथ उदीयमान कलाकारों को मञ्च प्रदान करने हेतु भी प्रतिबद्ध है। इसके लिए प्रति वर्ष ध्रुपद महोत्सव का आयोजन किया जाता है तथा विलुप्त हो रहे सांगीतिक विधाओं को सुरक्षित करने के लिए अलग-अलग विधाओं के कलाकारों को आमन्त्रित कर मञ्चीय प्रस्तुति हेतु आयोजन किया जाता है।

१०. विशिष्ट विद्वानों द्वारा पूर्ण की गई योजनायें :

१. काशी की प्राचीन देवमूर्तियाँ : कलात्मक एवं लक्षणपरक अध्ययन - प्रो० मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी एवं डॉ० राकेश सिंह यादव।
२. कम्पोजिट् फार्म एण्ड सिम्बल आन् सील एण्ड आर्ट ऑफ सिन्धु सरस्वती सिविलाइजेशन - डॉ० देव प्रकाश शर्मा।
३. संगीतनारायण का हिन्दी अनुवाद के साथ आलोचनात्मक सम्पादन : डॉ० ज्योति सिंह(शीघ्र ही प्रकाशन के लिये उपलब्ध होगा)।
४. वैदिक-पौराणिक डोटीज् इन जैन ट्रेडिशन एण्ड आर्ट : स्टडी इन रेफरेन्स टू असिमिलेशन, कम्प्युनेलिटी एण्ड हारमॅनी : प्रो० मारुति नन्दन प्रसाद तिवारी(सम्प्रति कार्य चल रहा है)।

११. व्याख्या केन्द्र

वाराणसी के सांस्कृतिक विरासत के महत्वपूर्ण पक्षों से न केवल भारतीय अपितु विश्व के जनमानस को परिचित कराने के उद्देश्य से वाराणसी के इकतीस विद्यालयों में भिन्न-भिन्न विषयों को लेकर व्याख्या केन्द्र का स्थापना, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की प्रेरणा से की गई है। वाराणसी के प्रख्यात विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व अथवा बनारसीपन को अभिव्यक्त करने वाले किसी एक विषय को लेकर व्याख्या केन्द्र की स्थापना करने के लिए संस्कृति मंत्रालय ने अपने अधीनस्थ संस्थाओं को अधिकृत किया है। व्याख्या केन्द्र में विद्यार्थी विषय अथवा विशेषज्ञों के विषय में जानकारी प्राप्त कर उस परम्परा के अभिवर्धन में बहुमूल्य योगदान कर सकेंगे, इससे बनारस की सांस्कृतिक परम्परा की अविच्छिन्न धारा प्रवाहित होती रहेगी। पर्यटन उद्योग को पल्लवित करने के लिए पर्यटन विभाग में व्याख्या केन्द्र की सूची उपलब्ध रहेगी। इससे पर्यटक अपनी-अपनी रुचि के अनुसार व्याख्या केन्द्र का चयन कर सकेंगे। विद्यार्थियों को स्व-संस्कृति से जोड़े रखना तथा पर्यटन की दृष्टि से व्याख्या केन्द्रों को विकसित करना इसका परम लक्ष्य है।

इसी लक्ष्य को सार्थक बनाने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने वाराणसी में २५ दिसम्बर से २९ दिसम्बर २०१४ तक आयोजित संस्कृति महोत्सव में सक्रिय भूमिका निभाई। भारतीय संस्कृति में महान् योगदान करने वाले विद्वानां/विदुषियों द्वारा किये गये योगदान को स्मरण करने के लिए उनसे सम्बन्धित पुस्तक/सीडी डीवीडी आदि को प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया गया। व्याख्या केन्द्र के लिए ३१ विद्यालयों का चयन किया गया है उनमें से दो विद्यालयों को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने अपनाया है। ये हैं-

१. श्री हरिश्चन्द्र बालिका इण्टर कालेज, मैदागिन वाराणसी : विषय - सिद्धेश्वरी देवी

२. प्रभुनारायण इण्टरकालेज, रामनगर, वाराणसी : विषय - रामनगर की रामलीला

इसके अतिरिक्त संस्था प्रतिवर्ष कलातत्त्वकोश की अवधरणा पर संगोष्ठो आयोजित करती रही है। इसमें सौन्दर्यशास्त्र एवं वाक्यपदीय पर विशेष व्याख्यान भी साम्मिलित हैं। वाराणसी क्षेत्रीय केन्द्र अपने कार्य क्षेत्र तथा गतिविधियों के विस्तार हेतु सतत प्रयत्नशील है।

शैक्षणिक समिति -

क्षेत्रीय केन्द्र को शैक्षणिक कार्ययोजनाओं को गति प्रदान करने के साथ-साथ तथा शैक्षणिक कार्यों के समुचित मूल्यांकन हेतु केन्द्र के मान्य सदस्य-सचिव द्वारा एक शैक्षणिक समिति का गठन किया गया है। देश के निम्नलिखित शीर्षस्थ विद्वान् इस समिति के सदस्य हैं -

१. प्रोफेसर गया चरण त्रिपाठी (अध्यक्ष)
२. प्रोफेसर नवजीवन रस्तोगी (सदस्य)
३. प्रोफेसर युगल किशोर मिश्र (सदस्य)
४. प्रोफेसर राजाराम शुक्ल (सदस्य)

५. प्रोफेसर ऋत्विक् सान्याल (सदस्य)
६. प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल (सदस्य)
७. प्रोफेसर विजय शंकर शुक्ल (क्षेत्रीय केन्द्र के निदेशक)

विशेष आमन्त्रित सदस्य

१. प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठी
२. प्रोफेसर प्रद्योत कुमार मुखोपाध्याय
३. प्रोफेसर सदाशिव कुमार द्विवेदी

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी में सम्प्रति कार्यरत कर्मचारियों का विवरण

प्रा० विजय शंकर शुक्ल	निदेशक, क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसी
प्रा० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	टैगोर फेलो
डॉ० नरेन्द्रदत्त तिवारी	परियोजना समन्वयक
डॉ० उषा शुक्ला	परियोजना समन्वयक
डॉ० रजनीकान्त त्रिपाठी	परियोजना सहयोगी
डॉ० त्रिलाचन प्रधान	परियोजना सहयोगी
डॉ० प्रेम नारायण सिंह	परियोजना सहयोगी
डॉ० ज्योति सिंह	टैगोर शोध अध्येता
सुश्री स्नेहा शुक्ला	सहायक पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी

प्रशासनिक अधिकारी -

श्री संजय सिंह	सहायक वित्तीय सलाहकार एवं लेखाधिकारी
श्री गौतम कुमार चटर्जी	प्रोटोकॉल अधिकारी
श्री मनीष सक्सेना	जूनियर रेप्रोग्राफी अधिकारी
श्री बृजदेव राम	कनिष्ठ श्रेणी लिपिक
श्री विनोद कुमार	कनिष्ठ श्रेणी लिपिक
श्री रमेश कुमार रावत	कनिष्ठ श्रेणी लिपिक